कर चले हम फ़िदा

–कैफ़ी आज़मी

काव्यांश

अपना जीवन प्रत्येक जीव को प्यारा होता है। असाध्य रोगी भी जीने की कामना करता है और अपने आप को ज़िंदा रखने की भरपूर कोशिश करता है। जीवन भर हम खतरों का सामना करते हैं, अपने जीवन को सुख और आनंद से भरने का प्रयत्न करते रहते हैं, इसलिए कि हम एक अच्छा जीवन, सुरक्षित जीवन व्यतीत कर सकें। किंतु एक सैनिक का जीवन इससे बिल्कुल भिन्न होता है। इस कविता में सैनिक की भावनाओं का अत्यधिक मार्मिक वर्णन किया गया है।

Topic Notes

- पाठ का सार
- पाठ में निहित केंद्रीय भाव

पाठ का सार

काव्यांश – 1

कर चले हम फ़िदा जानो-तन साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो।
साँस थमती गई, नब्ज़ जमती गई,
फिर भी बढ़ते कदम को न रुकने दिया,
कट गए सर हमारे तो कुछ ग़म नहीं,
सर हिमालय का हमने न झुकने दिया,
मरते-मरते रहा बाँकपन साथियो,
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो।

शब्दार्थ

फ़िदा- कुर्बान, *हवाले करना*- सौंपना, *थमती*- रुकती, *वतन*- देश, *बाँकपन*- जवानी का जोश

व्याख्या

सैनिक अपने देश पर कुर्बान होने जा रहे हैं और देश की जिम्मेदारी अन्य देशवासियों को सौंप रहे हैं। सैनिक हमें अर्थात् देशवासियों को साथियो कहकर संबोधित कर रहे हैं क्योंकि वह हमें यह एहसास दिलाना चाहते हैं कि हम सबने मिलकर ही देश की रक्षा करनी है। कविता के माध्यम से सैनिक की आवाज़ हम तक पहुँच रही है। वह कहता है कि भले ही मेरी नब्ज़ जमती गई और साँसे रुकती गई फिर भी अपने बढ़ते हुए कदमों को मैंने रुकने नहीं दिया। देश की सुरक्षा की खातिर भले ही सिर कट गए पर हिमालय का सिर अर्थात् देश का गौरव हमने झुकने नहीं दिया, कम नहीं होने दिया। इस प्रकार अंतिम साँस तक सैनिक देश की हिफाज़त करता है।

शिल्प सौंदर्य

(1) भावानुकूल, प्रभावशाली भाषा का प्रयोग है।
'मरते-मरते' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
(2) वीर रस की उत्पत्ति हुई है।
(3) काव्य में लयात्मकता है।
(4) फ़िदा, वतन, ग़म आदि उर्दू शब्दों का प्रयोग किया गया है।

भाव सौंदर्य

(1) उन सैनिकों की भावनाओं को शब्द दिए गए हैं जो देश पर कुर्बान होने जा रहे हैं।
(2) सैनिकों को अपनी जान की परवाह नहीं होती, वे केवल देश की सुरक्षा के प्रति चिंतित रहते हैं।

उदाहरण 1. **कवि ने 'साथियो' संबोधन का प्रयोग किसके लिए किया है ?** **[CBSE 2012, NCERT]**

उत्तर :कविता 'कर चले हम फ़िदा' के माध्यम से कवि ने सैनिकों की आवाज़ हम तक पहुँचाई है। उन्होंने साथियो शब्द का प्रयोग देशवासियों के लिए किया है, उनके अंदर यह भावना भरने के लिए कि वह और सैनिक अलग-अलग नहीं है, उन सबको मिलकर ही देश की सुरक्षा करनी है।

उदाहरण 2. **'सर हिमालय का हमने न झुकने दिया' इस पंक्ति में हिमालय किसका प्रतीक है?** **[CBSE 2011, NCERT]**

उत्तर :हिमालय भारत देश के गौरव का प्रतीक है। वह न केवल भारत के सौंदर्य में चार चाँद लगाता है अपितु उसी के कारण हमारे देश की जलवायु नियंत्रित रहती है और अन्य देशों से वह हमारी रक्षा भी करता है क्योंकि वह हमारी सीमाओं पर एक पहरेदार की तरह स्थित है। जो हिमालय हमारी रक्षा करता है उसकी रक्षा करना, उसका सिर ऊँचा बनाए रखना हमारा कर्तव्य है। अत: सैनिक अपना सिर कटा देते हैं, किंतु हिमालय का सिर झुकने नहीं देते अर्थात् अपने देश के गौरव को बरकरार रखने के लिए वे अंतिम साँस तक प्रयत्नशील रहते हैं।

काव्यांश – 2

ज़िंदा रहने के मौसम बहुत हैं मगर,
जान देने की रुत रोज आती नहीं।
हुस्न और इश्क दोनों को रुसवा करें,
वो जवानी जो खूँ में नहाती नहीं।
आज धरती बनी है दुल्हन साथियो,
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो।

शब्दार्थ

रुत- मौसम / मौका, *हुस्न*- सुंदरता, *इश्क*- प्रेम, *रुसवा*- बदनाम, *खूँ*- खून / रक्त।

व्याख्या

सैनिक का मानना है कि ज़िंदा रहते हुए, जीवन में उत्सव मनाने के मौके तो बहुत आते हैं, पर देश पर कुर्बान होने का अवसर हर किसी को और बार-बार नहीं मिलता। जवानी वह उम्र होती है जब हमारे अंदर जोश और जज़्बा सबसे अधिक होता है। वह जवानी जो देश पर कुर्बान नहीं होती अपने हुस्न और इश्क को रुसवा अर्थात् बदनाम कर देती है। एक सैनिक को तो अपने खून से रंगी हुई धरती भी दुल्हन-सी प्रतीत होती है। जब वह अपनी मातृभूमि की रक्षा करते-करते अपने रक्त की अंतिम बूँद भी बहा देता है तब अपने ही खून से रंगी हुई धरती को देखकर उसे ऐसा लगता है मानो वह एक नई-नवेली दुल्हन को छोड़कर जा रहा हो। इसलिए उसकी रक्षा करने की जिम्मेदारी वह हमें यानी अन्य देशवासियों को सौंपकर जाना चाहता है।

शिल्प सौंदर्य

(1) इश्क, हुस्न, रुसवा आदि उर्दू शब्दों का प्रयोग किया गया है।
(2) प्रभावोत्पादक भाषा है जो देशभक्ति की भावना जगाने में सक्षम है।
(3) 'धरती बनी है दुल्हन' में उपमा अलंकार है।

(4) पद में लयात्मकता है।

(5) ओजपूर्ण शब्दावली का प्रयोग है।

भाव सौंदर्य

(1) युवाओं को देश के प्रति समर्पित रहने के लिए प्रोत्साहित किया गया है।

(2) उसी युवावस्था को महत्वपूर्ण माना है जिसका जोश और उत्साह देश के काम आए।

उदाहरण 3. **धरती को दुल्हन क्यों कहा गया है? [NCERT]**

उत्तर :सैनिक जब अपनी जान की परवाह न करते हुए युद्धभूमि में आगे बढ़ते जाते हैं तब देश की रक्षा के लिए अपना लहू भी बहा देते हैं और खून से रंगी धरती उन्हें दुल्हन-सी प्रतीत होती है। जिस प्रकार एक युवक अपनी दुल्हन की रक्षा की कसम खाते हुए हर मुश्किल का सामना करता है उसी प्रकार सैनिक धरती की रक्षा की खातिर हर घाव सहते हैं और वह धरती उन्हें खून से रंगी होने के कारण लाल जोड़े में सजी दुल्हन-सी नजर आती है।

काव्यांश – 3

राह कुर्बानियों की न वीरान हो,
तुम सजाते ही रहना नए काफ़िले,
फ़तह का जश्न इस जश्न के बाद है,
जिंदगी मौत से मिल रही है गले,
बाँध लो अपने सर से कुन साथियो,
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो।

शब्दार्थ

वीरान- सुनसान / खाली, *काफ़िला*- समूह, *फ़तह*- जीत, *जश्न*- उत्सव, सर से कफ़न *बाँधना*- मरने के लिए / बलिदान के लिए तैयार रहना।

व्याख्या

जिस पल सैनिक देश की रक्षा करते हुए अंतिम साँसे लेता है, तब भी उसे अपनी जान जाने की परवाह नहीं होती किंतु यही चिंता सताती है कि उसके बाद देश की रक्षा कौन करेगा। अत: वह हमसे यानि अन्य देशवासियों से यह प्रार्थना करता है कि कुर्बानियों की इस राह को कभी सूना या खाली नहीं होने देना। वह चाहता है कि हम सब एक साथ मिलकर, काफ़िले बनाकर देश की रक्षा की राह पर आगे बढ़ते रहें। जीत का जश्न तो हर कोई मनाना चाहता है किंतु उससे पहले हमें जिंदगी और मौत के गले मिलने अर्थात् युद्ध भूमि के दर्शन करने पड़ते हैं। इसलिए सैनिक के रूप में कवि हमसे यह कहना चाहते हैं कि हम सिर पर कफ़न बाँध लें अर्थात् देश की रक्षा हेतु मर-मिटने के लिए तैयार रहें। देशभक्ति की भावना हमारे दिल में इस कदर होनी चाहिए कि हमारे होते हुए कोई हमारे देश का बाल भी बाँका न कर सके।

शिल्प सौंदर्य

(1) सरल, सहज और प्रभावशाली भाषा का प्रयोग है। फ़तह, जश्न, कफ़न आदि उर्दू शब्दों का प्रयोग किया गया है।

(2) 'सर से कफ़न बाँधना' मुहावरा है।

(3) वीर रस की उत्पत्ति हुई है।

भाव सौंदर्य

अंतिम साँस तक सैनिक किस तरह अपने कर्तव्य निभाते हैं, यह सत्य बहुत ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

उदाहरण 4. **कवि ने किस काफ़िले को आगे बढ़ाते रहने की बात कही है ? [NCERT]**

उत्तर :जब सैनिक अपने देश की सुरक्षा के लिए युद्धभूमि में उतरता है तब उसे अपनी जान की परवाह नहीं होती। केवल एक बात उसे सताती है कि जब वह नहीं रहेगा तो उसके देश और देशवासियों की रक्षा कौन करेगा इसलिए वह देशवासियों से आग्रह कर रहा है कि इस कुर्बानियों की राह को खाली मत होने देना। लगातार काफ़िले अर्थात् समूह में आगे बढ़ते जाना और अपने सिर पर कफ़न बाँधकर देश की रक्षा के लिए तैयार रहना।

काव्यांश – 4

खींच दो अपने खूँ से ज़मीन पर लकीर,
इस तरफ आने पाए न रावण कोई,
तोड़ दो हाथ अगर हाथ उठने लगे,
छू न पाए सीता का दामन कोई,
राम भी तुम, तुम्हीं लक्ष्मण साथियो,
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो।

शब्दार्थ

लकीर- रेखा, *दामन*- आँचल, *रावण*- शत्रु, *सीताराम भारत*- भूमि, *राम- लक्ष्मण*- देशवासी।

व्याख्या

कवि सैनिक की आवाज़ में हमें देश की रक्षा हेतु प्रेरित करते हुए कह रहे हैं कि हमें अपने खून से ज़मीन पर लकीर खींच देनी चाहिए अर्थात् दुश्मन को चुनौती दे देनी चाहिए। यदि रावण रूपी शत्रु-देश ने सीता रूपी मातृभूमि के आँचल को छूने का दुस्साहस किया तो हम राम और लक्ष्मण बनकर उसके हाथों को तोड़ देने की ताकत रखते हैं। हमें राम और लक्ष्मण की भाँति सीता रूपी मातृभूमि की रक्षा के लिए तत्पर रहना है।

शिल्प सौंदर्य

(1) पूरे पद में दृष्टांत अलंकार का सुंदर प्रयोग किया गया है।

(2) भाषा ओजपूर्ण है।

(3) ज़मीन, लकीर, दामन जैसे उर्दू शब्दों का प्रयोग किया गया है।

(4) भाषा सरल, सहज और प्रभावपूर्ण है।

भाव सौंदर्य

पौराणिक कथा को आधार बनाकर हमें देशहित में कार्य करने के लिए प्रेरित किया गया है।

उदाहरण 5. **काव्यांश पर आधारित :**

ज़िंदा रहने के मौसम बहुत हैं मगर,
जान देने की रुत रोज आती नहीं।
हुस्न और इश्क दोनों को रुसवा करें,
वो जवानी जो खूँ में नहाती नहीं।
आज धरती बनी है दुल्हन साथियो,
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो।

(क) हुस्न और इश्क को रुसवा कौन करता है?
- **(i) वह जवानी जो खून में नहीं नहाती**
- **(ii) वह जवानी जो खून में नहा जाती है**
- **(iii) वह जवानी जो इश्क नहीं करती**
- **(iv) वह जवानी जिसमें हुस्न नहीं होता**

(ख) 'जान देने की रुत' का अर्थ है—
- **(i) जीवन को व्यर्थ गँवा देना**
- **(ii) किसी की जान लेना**
- **(iii) ऋतुओं का बदलना**
- **(iv) देश के लिए कुर्बान होना**

(ग) इस काव्यांश का संदेश यह है कि हमें—
- **(i) धरती को दुल्हन की तरह सजाना चाहिए**
- **(ii) हुस्न और इश्क को रुसवा करना चाहिए**
- **(iii) देश पर कुर्बान होने के लिए तैयार रहना चाहिए**
- **(iv) देश को दूसरों के हवाले कर देना चाहिए**

(घ) धरती को दुल्हन क्यों कहा गया है?

उत्तर :**(क)** *(i) वह जवानी जो खून में नहीं नहाती*

व्याख्यात्मक हल : जवानी में ही जोश सबसे अधिक होता है और वह तभी सार्थक है जब देश के हित में उसका प्रयोग किया जाए।

(ख) *(iv) देश के लिए कुर्बान होना*

(ग) *(iii) देश पर कुर्बान होने के लिए तैयार रहना चाहिए।*

(घ) *धरती सैनिकों के खून से लाल रंग में रंग गई है अत: लाल जोड़े में सजी दुल्हन-सी प्रतीत हो रही है।*

पाठ में निहित केंद्रीय भाव

एक सैनिक जो युद्धभूमि की ओर कदम बढ़ा रहा है, उसे अपनी जान की परवाह नहीं है किंतु वह इस बात से चिंतित है कि जब वह नहीं रहेगा तो उसके देश की रक्षा कौन करेगा। इसलिए वह अन्य देशवासियों को साथी कहकर संबोधित कर रहा है और यह बता रहा है कि वह तो अपनी जान अपने देश के लिए कुर्बान करने जा रहा है किंतु उसके बाद देश की सुरक्षा की जिम्मेदारी अन्य देशवासियों को लेनी होगी। सैनिक कहता है कि जब उसकी साँसें रुकने लगती हैं, नब्ज़ जमने लगती है तब भी वह अपने कदमों को रुकने नहीं देता। वह अपना सिर कटा देता है किंतु हिमालय का सिर अर्थात् देश का गौरव झुकने नहीं देता। कवि का मानना है कि ज़िंदा रहने के अवसर तो बहुत मिलते हैं पर देश की रक्षा करते हुए जान देने का अवसर हर किसी को और बार-बार नहीं मिलता। सैनिक अपना खून बहाकर देश की हिफाज़त करता है और यही कामना वह हमसे अर्थात् देशवासियों से करता है। वह चाहता है कि वह राह जिस पर चलकर वह कुर्बान होने जा रहा है देशवासी उसे सूना न होने दें। कवि ने हमें राम और लक्ष्मण बनकर सीता रूपी मातृभूमि की रक्षा रावण रूपी शत्रु-देश से करने के लिए प्रोत्साहित किया है। संक्षेपत: यह कविता एक मर्मस्पर्शी देशभक्ति गीत है।

वस्तुपरक प्रश्न

[1 अंक]

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

1. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर उचित विकल्प छाँटकर दीजिए—

खींच दो अपने खूँ से ज़मीन पर लकीर,
इस तरफ आने पाए न रावण कोई,
तोड़ दो हाथ अगर हाथ उठने लगे,
छू न पाए सीता का दामन कोई,
राम भी तुम, तुम्हीं लक्ष्मण साथियो,
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो।

(क) खून से लकीर खींचने का अर्थ है—
- **(i) घायल हो जाना**
- **(ii) कुर्बानी देना**
- **(iii) दुश्मन को चुनौती देना**
- **(iv) खून से रेखा बनाना**

(ख) रावण शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है ?
- **(i) सैनिकों के लिए**
- **(ii) शत्रु-देश के लिए**

(iii) मातृभूमि के लिए
(iv) संकट के लिए

(ग) इस काव्यांश का संदेश है—
(i) हमें लड़ने के लिए तैयार रहना चाहिए
(ii) हमें राम-लक्ष्मण से सीख लेनी चाहिए
(iii) हमें मातृभूमि को सीता समझना चाहिए
(iv) हमें देश की रक्षा के लिए तैयार रहना चाहिए

(घ) इस काव्यांश के कवि और कविता का नाम है—
(i) अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो— सुमित्रानंदन पंत
(ii) कर चले हम फ़िदा—सुमित्रानंदन पंत
(iii) अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो— मैथिलीशरण गुप्त
(iv) कर चले हम फ़िदा—कैफ़ी आज़मी

उत्तर : (क) *(iii) दुश्मन को चुनौती देना*

(ख) *(ii) शत्रु-देश के लिए*

व्याख्यात्मक हल : हम मातृभूमि को सीता की तरह पूजते हैं। उसकी रक्षा राम और लक्ष्मण बनकर करते हैं, तो शत्रु-देश हमारे लिए रावण के समान है।

(ग) *(iv) हमें देश की रक्षा के लिए तैयार रहना चाहिए*

व्याख्यात्मक हल : हमें आपस में लड़ने के लिए नहीं बल्कि देश की रक्षा के लिए प्रेरित किया गया है।

(घ) *(iv) कर चले हम फ़िदा—कैफ़ी आज़मी*

2. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर उचित विकल्प छाँटकर दीजिए—

नब्ज़ जमती गई, सांस थमती गई,
फिर भी बढ़ते कदम को न रुकने दिया,
कट गए सर हमारे तो कुछ ग़म नहीं,
सर हिमालय का हमने न झुकने दिया,
मरते-मरते रहा बाँकपन साथियो,
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो।

(क) सैनिक के कदम कब तक आगे बढ़ते जाते हैं?
(i) अंतिम साँस तक (ii) ज़िन्दा रहने तक
(iii) नब्ज जमने तक (iv) उपर्युक्त सभी

(ख) 'सर हिमालय का हमने न झुकने दिया'- का अर्थ है—
(i) हिमालय को सजाना
(ii) हिमालय की हिफाज़त करना
(iii) भारत के गौरव को बनाए रखना
(iv) भारत का गुणगान करना

(ग) मरते दम तक क्या कम नहीं होता?
(i) लड़ने का जोश
(ii) देश-प्रेम
(iii) देश की रक्षा का उत्साह
(iv) जवानी का जोश

(घ) वतन को हमारे हवाले कौन करना चाहता है?
(i) हमारी सरकार
(ii) कवि कैफ़ी आज़मी
(iii) शत्रु-देश
(iv) हमारे देश के सैनिक

(क) *(iv) उपर्युक्त सभी*

(ख) *(iii) भारत के गौरव को बनाए रखना*

व्याख्यात्मक हल : हिमालय भारत के गौरव का प्रतीक है। हिमालय का सिर झुकने का अर्थ है भारत के मान-सम्मान को ठेस पहुँचना।

(ग) *(iii) देश की रक्षा का उत्साह*

वर्णनात्मक प्रश्न

[2 - 5 अंक]

लघु उत्तरीय प्रश्न (25 – 30 शब्द)

[2 अंक]

3. 'कर चले हम फ़िदा' कविता में किन दो जश्नों की बात की गई है ? **[Diksha]**

उत्तर : कवि कैफ़ी आज़मी ने कहा है कि 'जीत का जश्न इस जश्न के बाद है' अर्थात् उन्होंने दो जश्न मनाने की बात की है। एक वह जो हम जीत के बाद मनाते हैं और एक जीत से पहले अर्थात् संघर्ष करने का जश्न। जब सैनिक युद्ध भूमि में उतरता है, उसे जिंदगी और मौत को गले मिलते देखना पड़ता है। इसे भी वह पूरे जोश और उत्साह के साथ जश्न की तरह मनाए तभी जीत का जश्न मनाने का अवसर मिलता है।

4. 'कर चले हम फ़िदा' गीत में कवि ने वीरों के प्राण छोड़ते समय का मार्मिक वर्णन किस प्रकार किया है? अपने शब्दों में लिखिए। **[CBSE 2016]**

उत्तर : कवि 'कैफ़ी आज़मी' ने उस स्थिति का मार्मिक चित्रण किया है जब सैनिक देश की हिफाज़त के लिए सीमा पर

तैनात रहता है और शत्रु देश का आक्रमण होने पर घायल भी हो जाता है। उसकी साँसें थमने लगती हैं, नब्ज जमने लगती है, किंतु बढ़ते हुए कदमों को वह रुकने नहीं देता। अंतिम साँस तक आगे बढ़कर शत्रु-देश को हराने और अपने देश के मान-सम्मान की रक्षा करने का प्रयत्न करता है।

5. **इस गीत में 'सर पर कफ़न बाँधना' किस ओर संकेत करता है? यह कहकर कवि देश के सेवकों से क्या आशा करता है?**

6. **सैनिक का जीवन कैसा होता है? 'कर चले हम फ़िदा' गीत के आधार पर बताइए। [CBSE 2013]**

उत्तर : एक सैनिक का समाज, देश व विश्व में सम्मान भरा स्थान होता है। उसका जीवन अनुशासित एवं जनहित हेतु समर्पित होता है। उसे विषम से विषम परिस्थितियों में शत्रु का डटकर सामना करने हेतु अत्यंत कठिन प्रशिक्षण दिया जाता है। उसे अपने परिवार के साथ रहने का मोह व निजी स्वार्थ त्यागना होता है। पूरे देश को अपना परिवार मानकर उसकी सुरक्षा हेतु सीमाओं चौबीसों घंटे तैनात रहना होता है।

प्रत्येक व्यक्ति को अपनी जान बहुत प्यारी होती है। एक असाध्य रोगी भी अपने निरोगी होने की कामना करता है। यदि जान खतरे में नजर आती है तो हर कोई उसकी हिफाज़त करना चाहता है। किंतु सैनिक ही है जो जानबूझकर अपनी जान को खतरे में डालता है ताकि देश और देशवासियों की रक्षा कर सके। जब उसकी जान पर बन आती है तब उसे एक ही चिंता सताती है कि जब वह नहीं रहेगा तो देश को कौन सँभालेगा।

7. **गीत अपनी किन विशेषताओं के कारण जीवन भर याद रह जाते हैं? [CBSE 2011]**

उत्तर : गीत लयात्मक होते हैं, कोमल भावों से भरे होते हैं, सुनने में अच्छे लगते हैं और हमारे दिल को छू जाते हैं। यही कारण है कि गीत लंबे समय तक याद रह जाते हैं। यदि हमें कोई संदेश या कोई प्रेरणा साधारण शब्दों में दी जाए तो शायद याद न रहे किंतु वही बात गीत के रूप में कही जाए तो जल्दी याद हो जाती है और हमेशा याद रहती है।

8. **कर चले हम फ़िदा' कविता से आपको क्या प्रेरणा मिलती है? [CBSE 2011]**

9. **'कर चले हम फ़िदा' कविता में धरती को दुल्हन क्यों कहा गया है? [CBSE 2015]**

उत्तर : दुल्हन शब्द सुनते ही हमारी आँखों के सामने लाल जोड़े में सजी सुंदर युवती आ जाती है। कवि 'केफ़ी आज़मी' ने धरती को दुल्हन कहा है क्योंकि वह सैनिक जो देश की रक्षा करते करते अपना खून बहा देता है और धरती उसके खून से लाल रंग जाती है, उसे लगता है मानो वह एक नई-नवेली दुल्हन को छोड़ कर जा रहा है। जाते-जाते वह उस दुल्हन की जिम्मेदारी हमें अथवा अन्य देशवासियों को सौंप देना चाहता है।

⚠ एहतियात

➥ *धरती को दुल्हन अवश्य कहा गया है किंतु सैनिक उस दुल्हन के मोह में उलझा नहीं है बल्कि उसकी सुरक्षा की जिम्मेदारी हम सब को सौंपना चाहता है।*

10. **'कर चले हम फ़िदा' कविता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का उल्लेख करते हुए उसका प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए। [CBSE 2017]**

उत्तर : 'कर चले हम फ़िदा' कवि कैफ़ी आज़मी द्वारा रचित एक देशभक्ति गीत है। इसकी रचना 1962 के भारत-चीन युद्ध पर निर्मित फिल्म हकीकत के लिए की गई थी। इस गीत के बोल और चित्रांकन अत्यधिक मार्मिक हैं । इतने वर्षों के बाद भी इस गीत को सुनकर हमारा रोम-रोम सिहर उठता है और आँखों में आँसू उतर आते हैं। यह गीत अपने आप में हर भारतवासी के हृदय में देशभक्ति की भावना जगाने के लिए पर्याप्त है।

11. **अपने देश के लिए सीता और देशवासियों के लिए राम और लक्ष्मण शब्दों का प्रयोग करने के पीछे कवि की क्या मंशा है?**

12. **'कर चले हम फ़िदा' कविता में कवि कैफ़ी आज़मी की देश भक्ति कैसे झलक रही है?**

उत्तर : सैनिकों के जो भाव कविता में झलक रहे हैं वह वास्तव में कवि कैफ़ी आज़मी के ही भाव हैं। उनका मानना यह है कि देश के ऊपर कुछ नहीं है। देश-भक्ति, देश की सुरक्षा, देश का मान-सम्मान प्रत्येक देशवासी के लिए सर्वोपरि होना चाहिए। देश-हित में यदि हमें अपनी जान भी देनी पड़े तो हँसते-हँसते दे देनी चाहिए। देश के प्रति हमें अपने कर्तव्य निभाने चाहिए। ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिए जिससे देश के गौरव को ठेस पहुँचे। देश के हित में ही हमारा हित है।

निबंधात्मक प्रश्न (60–70 / 80–100 शब्द) [4 एवं 5 अंक]

13. **'कर चले हम फ़िदा' कविता में किस प्रकार की मृत्यु को अच्छा कहा गया है और क्यों? इसमें कवि क्या संदेश देना चाहता है? [CBSE 2016]**

उत्तर : 'कर चले हम फ़िदा' एक देश भक्ति गीत है जिसे कवि कैफ़ी आज़मी ने फिल्म 'हकीकत' के लिए लिखा था। यह गीत वर्षों से भारतवासियों के दिल में देशभक्ति की

भावना जगाता आ रहा है। इस गीत के माध्यम से कवि ने उन सैनिकों के दिल की आवाज़ हम तक पहुँचाई है जो हँसते-हँसते अपने देश पर कुर्बान हुए थे। कवि के अनुसार सैनिक इसे अपना सौभाग्य समझता है कि उसे अपने देश की रक्षा के लिए प्राण न्यौछावर करने का अवसर मिल रहा है। उसे केवल एक ही चिंता सताती है कि जब वह नहीं रहेगा तब इस देश की हिफाज़त कौन करेगा। इसलिए वह सभी देशवासियों से यह अपील कर रहा है कि वह उसी की तरह देश की रक्षा करने के लिए आगे आते रहें। कुर्बानियों की राह को कभी वीरान न होने दें ताकि शत्रु देश कभी हमारी मातृभूमि की ओर आँख उठाकर न देख सके।

कवि ने उसी जीवन और उसी मृत्यु को अच्छा बताया है जो देश के प्रति समर्पित हो और यही संदेश दिया है कि देश का हित प्रत्येक देशवासी के लिए सर्वोपरि होना चाहिए।

14. सीमा पर भारतीय सैनिकों के द्वारा सहर्ष स्वीकार की जा रही कठिन परिस्थितियों का उल्लेख कीजिए और प्रतिपादित कीजिए कि 'कर चले हम फ़िदा' गीत सैनिकों के हृदय की आवाज है। [CBSE 2020]

उत्तर : हम करोड़ों भारतीय अपने अपने घरों में सुरक्षित हैं क्योंकि हमारे देश की सीमाओं पर हमारे भारतीय सैनिक हर पल तैनात हैं। हमें विश्वास है कि उनके होते हुए कोई हमारे देश का बाल भी बाँका नहीं कर सकता। वह सैनिक मरते दम तक, हँसते-हँसते देश की हिफाज़त करते हैं। शत्रु देश का सामना करते हुए भले ही उनकी नब्ज़ थम जाए और खून जमने लगे पर उनके कदम रुकते नहीं हैं। उनका जोश और उत्साह अंतिम साँस तक बना रहता है। जीते जी ही नहीं, वह मरने के बाद भी देश की सुरक्षा की ही कामना करते हैं। कवि उन सैनिकों की भावनाओं को समझते हैं और उन्हीं के दिल की आवाज़ को उन्होंने इस कविता के माध्यम से हम तक पहुँचाया है कि वे हम सब से क्या अपेक्षा करते हैं।

हमारे अंदर देशभक्ति का जज़्बा जगाने के लिए उन्होंने हमें साथियो कहकर संबोधित किया है क्योंकि हम सब ने मिलकर ही देश की रक्षा करनी है।

15. 'कर चले हम फ़िदा' नामक गीत के आधार पर सैनिक जीवन की चुनौतियों का वर्णन कीजिए। सैनिकों का हौसला बढ़ाने के लिए आप क्या करेंगे? [CBSE 2020]

16. 'कर चले हम फ़िदा' कविता में वर्णित देशभक्ति का वर्णन कीजिए? [Diksha]

उत्तर : कविता 'कर चले हम फ़िदा' एक ऐसा देशभक्ति गीत है जो किसी भी देशवासी के दिल को छुए बिना नहीं रह सकता। बरसों बाद, आज भी इस गीत को सुनकर रोम-रोम में देशभक्ति का स्पंदन हो जाता है। देश के लिए कुछ कर गुजरने का जज़्बा पैदा हो जाता है। इस गीत का एक-एक शब्द सैनिक के दिल की भावनाओं को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने में सक्षम है। सैनिक के देश-प्रेम से भरे भावों ने इस कविता को अत्यधिक मार्मिक बना दिया है।

अपने घर-परिवार, सुख-चैन को भूलकर देश की हिफाज़त करना, अंतिम साँस तक शत्रु को पीछे धकेलने के लिए डटे रहना, अपने ही खून से रंगी धरती को देखकर भी कुछ ग़म न करना और स्वयं कुर्बान हो जाने पर अन्य देशवासियों को देश की रक्षा हेतु प्रेरित करना देशभक्ति की अद्भुत मिसाल है। कवि 'कैफ़ी आज़मी' ने इस गीत की रचना करके एक सच्चा देशभक्त होने का परिचय दिया है।

17. 'फ़तह का जश्न इस जश्न के बाद है।' कवि ने ऐसा क्यों कहा है? [CBSE 2016]

उत्तर : फ़तह अर्थात् जीत का जश्न अपने जीवन में हर कोई मनाना चाहता है। पर इसके लिए पहले संघर्ष करना पड़ता है, मेहनत करनी पड़ती है। एक सैनिक के लिए सबसे बड़ी जीत यही है कि वह शत्रु को हराकर अपने देश की हिफाज़त कर पाए। जब वह ऐसा कर पाता है तो वह अवसर उसके लिए जश्न मनाने का होता है। किंतु वह जश्न मनाने से पहले उसे युद्धभूमि में ज़िंदगी और मौत के गले मिलने के उस दृश्य को देखना पड़ता है जो अपने आप में एक जश्न के समान है। यदि वह युद्धभूमि में जाने से घबराएगा तो वह दुश्मन का सामना नहीं कर पाएगा। इसलिए वह खुशी-खुशी युद्धभूमि में उतरता है, पूरे जोश और जज़्बे के साथ, अपनी पूरी ताकत लगाकर शत्रु का सामना करता है। उसी की बदौलत उसके साथ पूरा देश जीत का जश्न मना पाता है।

ऐसा कहकर कवि ने हम सबको संघर्ष करने जीवन में चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार किया है।

एहतियात

➡ *युद्धभूमि का दृश्य भयानक होता है किंतु यहाँ उसे भी एक जश्न कहकर कवि ने उस डर को दूर करने का प्रयास किया है।*

18. 'कर चले हम फ़िदा' कविता पाठक के मन को छू जाती है आपके मत में इसके क्या कारण हो सकते हैं? [CBSE 2015]

TOPPER'S CORNER

वर्णनात्मक प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न [2 अंक]

1. 'कर चले हम फिदा' कविता में कवि ने 'साथियों' संबोधन का प्रयोग किसके लिए किया है और क्यों?

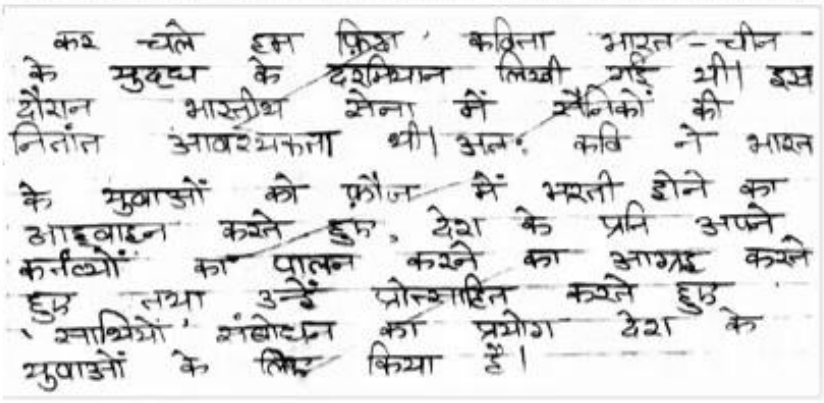

उत्तर 'कर चले हम फिदा' कविता भारत-चीन के युद्ध के दरम्यान लिखी गई थी। इस दौरान भारतीय सेना में सैनिकों की नितांत आवश्यकता थी। अतः कवि ने भारत के युवाओं को फौज में भरती होने का आह्वाहन करते हुए, देश के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करने का आग्रह करते हुए तथा उन्हें प्रोत्साहित करते हुए 'साथियों' संबोधन का प्रयोग देश के युवाओं के लिए किया है।

[CBSE Topper 2015]

निबन्धात्मक प्रश्न [5 अंक]

2. 'कर चले हम फिदा' कविता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का उल्लेख करते हुए उसका प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए।

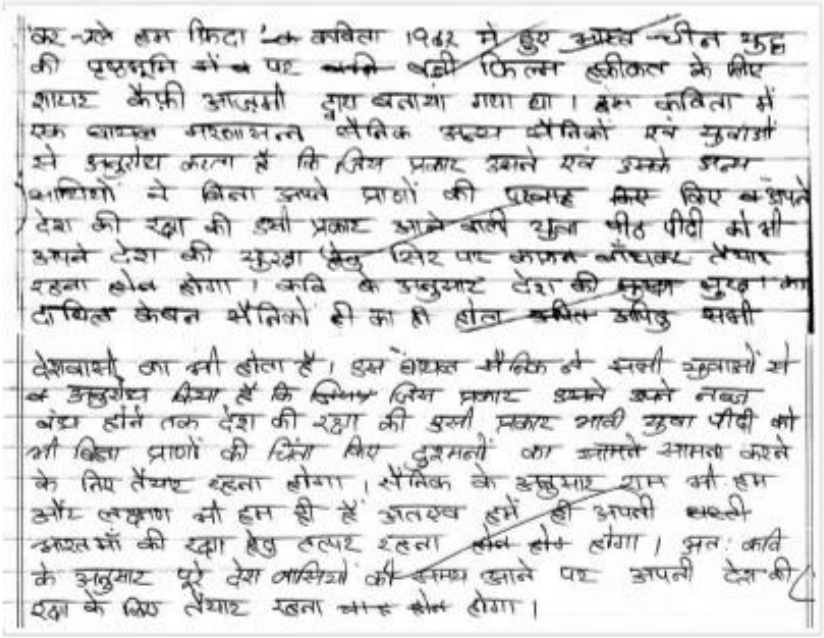

उत्तर 'कर चले हम फिदा' कविता 1962 में हुए भारत-चीन युद्ध की पृष्ठभूमि पर बनी फिल्म हकीकत के लिए शायर कैफ़ी आज़मी द्वारा बनाया गया था। इस कविता में एक घायल मरणासन्न सैनिक अन्य सैनिकों एवं युवाओं से अनुरोध करता है कि जिस प्रकार उसने एवं उसके अन्य साथियों ने बिना अपने प्राणों की परवाह किए अपने देश की रक्षा की उसी प्रकार आने वाली युवा पीढ़ी को भी अपने देश की सुरक्षा हेतु सिर पर कफन बाँधकर तैयार रहना होगा। कवि के अनुसार देश की सुरक्षा का दायित्व केवल सैनिकों का ही नहीं अपितु सभी देशवासियों का भी होता है। इस घायल सैनिक ने सभी युवाओं से अनुरोध किया है कि जिस प्रकार उसने अपने नब्ज़ बंद होने तक देश की रक्षा की उसी प्रकार भावी युवा पीढ़ी को भी बिना प्राणों की चिंता किए दुश्मनों का सामना करने के लिए तैयार रहना होगा। सैनिक के अनुसार राम भी हम और लक्ष्मण भी हम ही हैं अतएव हमें ही अपनी भारत माँ की रक्षा हेतु तत्पर रहना होगा। अतः कवि के अनुसार पूरे देशवासियों को समय आने पर अपने देश की रक्षा के लिए तैयार रहना होगा।

[CBSE Topper 2017]